

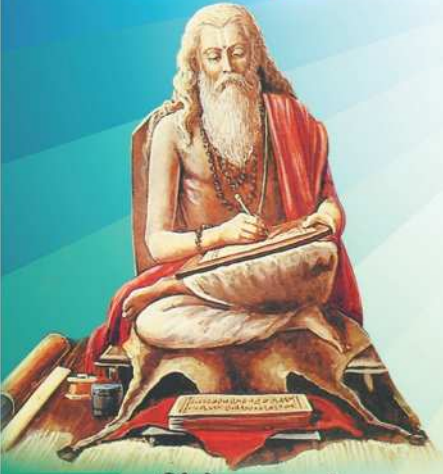
संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

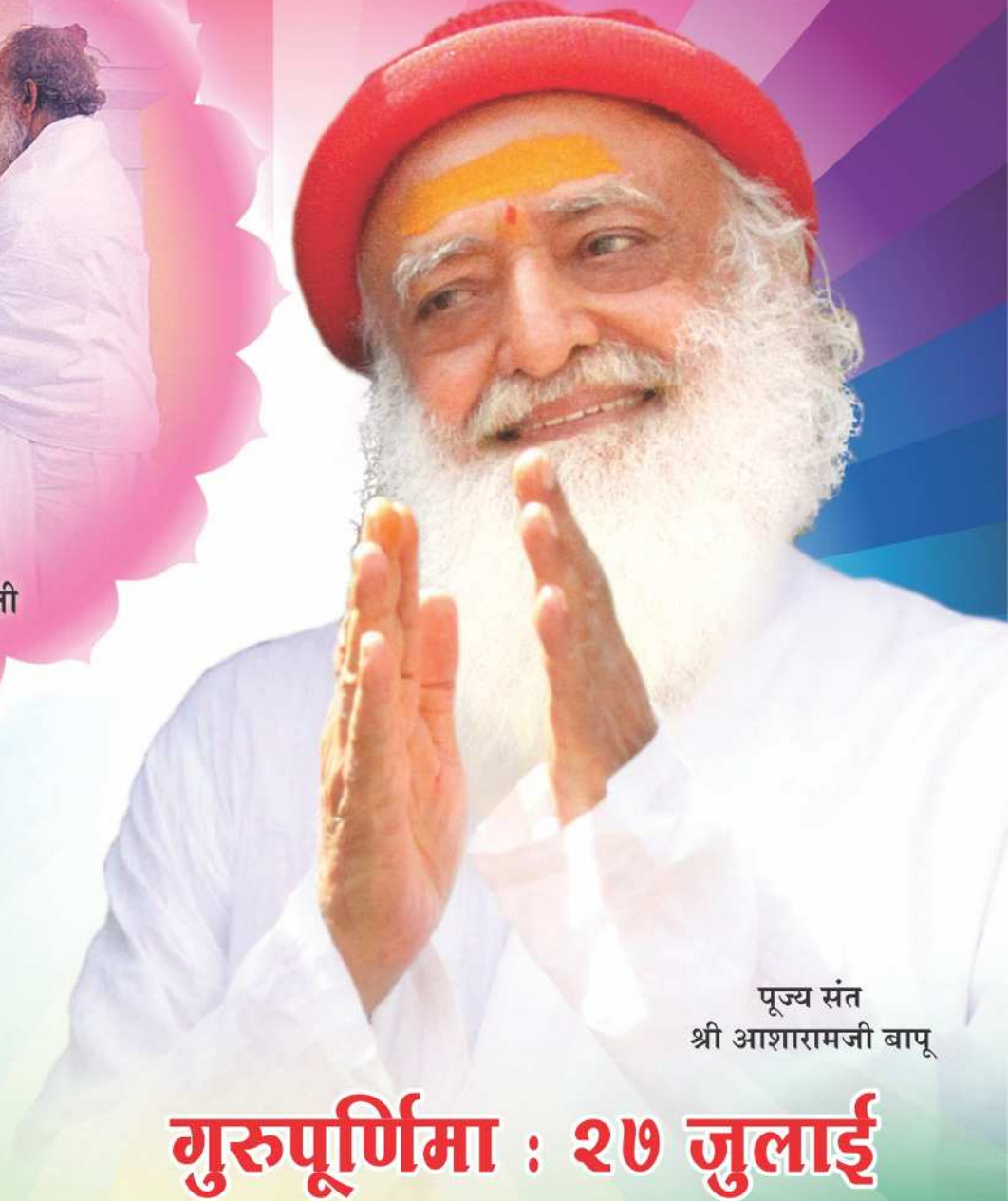
मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१८
वर्ष : २८ अंक : १
(निरंतर अंक : ३०७)
पृष्ठ संख्या : ३६
(आवरण पृष्ठ सहित)



अपने सद्गुरु साँई श्री लीलाशाहजी
की आरती करते हुए पूज्यश्री



महर्षि वेदव्यासजी



पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

गुरुपूर्णिमा : २७ जुलाई

शिष्य का परम मंगल करनेवाला महापर्व पृष्ठ १२

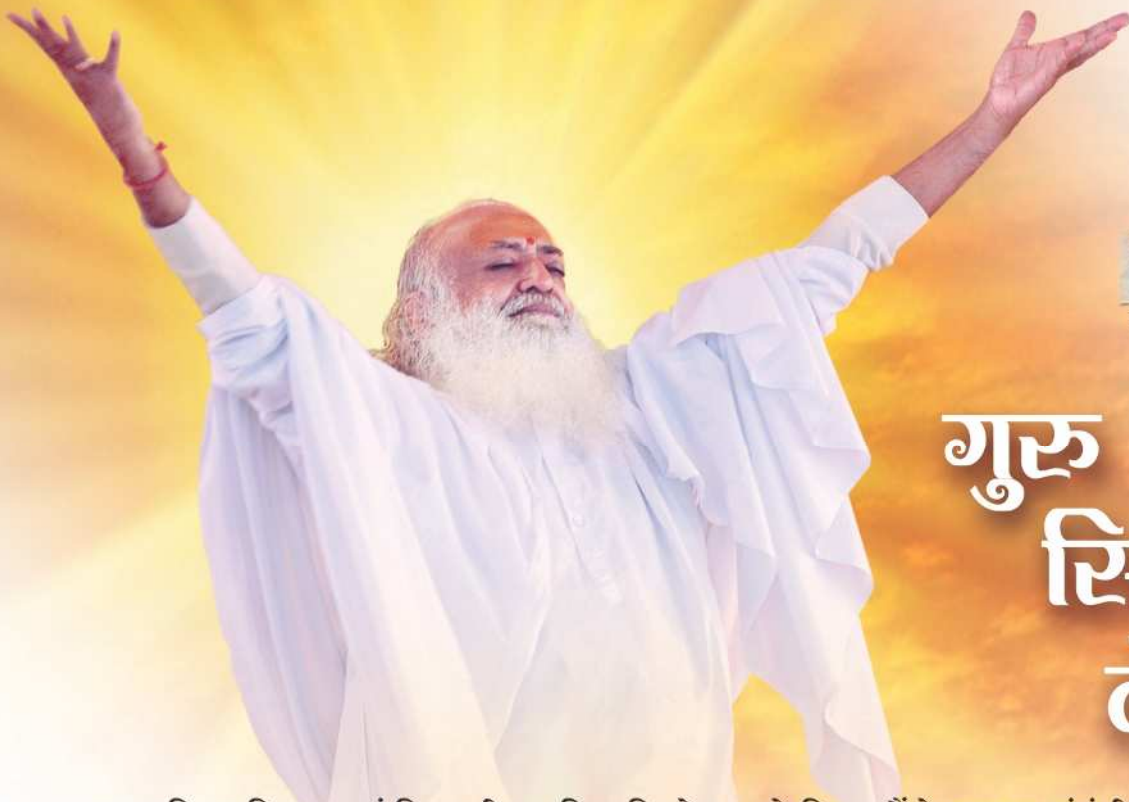
जो हरि हैं वे व्यास हैं, जो व्यास हैं वे ही तो हरि हैं । जो मेरे लीलाशाह प्रभु हैं वे ही ब्रह्म हैं । जो ब्रह्म हैं वे लीलाशाह प्रभु ही तो हैं । अपने सद्गुरु के लिए जिस शिष्य के हृदय में भगवद्भाव, ब्रह्मभाव है, समझ लो उसका जीवन सफल है । - पूज्य बापूजी

...तो बापूजी
शीघ्र ही बाहर आयेंगे ६

ग्रहण की हानियों से बचकर
कैसे उठायें करोड़ गुना लाभ ?



पुण्यात्मा, उत्तम संतान
की प्राप्ति के लिए २९



साँई श्री लीलाशाहजी महाराज

गुरु सिरजे ते पार!

आध्यात्मिक विकास एवं दिव्य जीवन की प्राप्ति हेतु पूर्ण सत्य के ज्ञाता, समर्थ सद्गुरु की अत्यंत आवश्यकता होती है। जैसे प्रकाश बिना अंधकार का नाश सम्भव नहीं, वैसे ही ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु के बिना अज्ञानांधकार का नाश सम्भव नहीं, सर्व दुःखों की निवृत्ति व परमानंद की प्राप्ति सम्भव नहीं। अतः शास्त्र और संतजन सद्गुरु की महिमा गाते-गाते नहीं अघाते।



ब्रह्ममूर्ति उड़िया बाबाजी के बड़े ही हितकारी वचन हैं : “गुरु में जब तक भगवद्बुद्धि नहीं की जाती, तब तक संसार-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता। गुरु में मनुष्यबुद्धि होना ही पाप है। गुरु और भगवान में बिल्कुल भेद नहीं है - यही मानना कल्याणकारी है और इसी भाव से भगवान मिलते हैं। जब तक शिष्य यह न समझ ले कि ‘गुरु ही मेरा सर्वस्व है’ तब तक शिष्य का कल्याण नहीं हो सकता। उत्तम शिष्य चिंतन करने से गुरु की शक्ति प्राप्त कर लेते हैं, मध्यम शिष्य दर्शन करने से और निकृष्ट शिष्य प्रश्न करने से शक्ति प्राप्त करते हैं। हमारे यहाँ गुरु से प्रश्न करने की आवश्यकता नहीं मानी जाती। गुरु की सेवा करें और उनका चिंतन करें। जब गुरु में अनुराग है - गुरु हमारे हैं तो उनके गुण हमारे हैं ही।”



स्वामी अखंडानंदजी सरस्वती कहते हैं : “आप अपने आचार-विचार को गुरु के उपदेश के अनुसार बनाइये। गुरु का जो गुरुत्व है वह भगवान का गुरुत्व है, उनके

जो विचार हैं वे भगवत्-संबंधी विचार हैं और वे आपको संसार के बंधन से छुड़ानेवाले हैं। जहाँ कोई आचार-विचार, कोई संस्कार, कोई आकार, कोई प्रकार आपको बाँध नहीं सके, गुरु आपको वहाँ पहुँचानेवाले होते हैं। उनका सम्मान कीजिये।”



सद्गुरु का स्थान अद्वितीय बताते हुए आनंदमयी माँ कहती हैं : “गुरु क्या कभी मनुष्य हो सकते हैं ? गुरु साक्षात् भगवान हैं। गुरु का स्थान दूसरा कोई नहीं ले सकता। गुरु में मनुष्यबुद्धि करना महापाप है।”



संत कबीरजी कहते हैं :

गुरु हैं बड़े गोविंद ते, मन में देखु विचार ।
हरि सिरजे ते वार हैं, गुरु सिरजे ते पार ॥

गुरुदेव गोविंद से बड़े हैं, इस तथ्य का मन में विचार करके देखो। हरि सृष्टि करते हैं तो प्राणियों को संसार में ही रखते हैं और गुरुदेव सृष्टि करते हैं (शिष्य के अंतःकरण में आत्मवृष्टि का सृजन करते हैं) तो संसार से मुक्त कर देते हैं।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू कहते हैं : “दुनिया के सब मित्र, सब साधन, सब सामग्रियाँ, सब धन-सम्पदा मिलकर भी मनुष्य को अविद्या (असत्य जगत को सत्य मानना व सदा विद्यमान परमात्मा को न जानना), अस्मिता (देह को ‘मैं’ मानना), राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्यु का भय) - इन पाँच दोषों से नहीं छुड़ा सकते। सद्गुरुओं का सत्संग, सान्निध्य और उनकी दीक्षा ही बेड़ा पार करने का सामर्थ्य रखती है।”

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओडिया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी (देवनागरी) व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २८ अंक : १ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३०७
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०१८
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेंद्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम,
मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैनुफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों,
पौंटा साहिब, सिमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व
न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष,
मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैनुफेक्चर्स' (Hari Om Manufactures) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

सम्पर्क पता :

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम,
संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग,
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ३९८७७७४२
Email : ashramindia@ashram.org
Website : www.ashram.org,
www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ३००	US \$ 20
द्विवार्षिक	₹ ६००	US \$ 40
पंचवार्षिक	₹ १५००	US \$ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस अंक में...

- ❖ गुरु सिरजे ते पार ! २
- ❖ गुरु संदेश * ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का तो कितना आभार मानें ! ४
- ❖ ...तो बापूजी शीघ्र ही बाहर आयेंगे ६
- ❖ आप कहते हैं... ७, ९ व १०
- ❖ शास्त्र प्रसंग * ...संकल्प व नाम-स्मरण में है अथाह सामर्थ्य ८
- ❖ साधना प्रकाश * तीन महत्वपूर्ण बातें ११
- ❖ पर्व मांगल्य * शिष्य का परम मंगल करनेवाला महापर्व १२
- ❖ उपासना अमृत * साधना में चार चाँद लगानेवाला अमृतकाल... १३
- ❖ प्रेरक प्रसंग * पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग १४
- ❖ जीवन जीने की कला १६
 - * मंत्रजप में आनेवाले विघ्न व उनसे रक्षा के उपाय
- ❖ योग-वेदांत-सेवा * संगठन की मजबूती का स्वर्णिम सूत्र १७
- ❖ बाल संस्कार * ...केन्द्र-शिक्षकों के भाग्य का क्या कहना ! १७
- ❖ विद्यार्थी संस्कार * सूरदास बालक में से कैसे बने महान संत ? १८
 - * बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु 'बाल संस्कार केन्द्र'
- ❖ तेजस्वी युवा * सच्ची स्वतंत्रता क्या है ? २०
- ❖ महिला उत्थान * धन्य हैं ऐसी माताएँ ! २१
 - * प्रेम की पूर्णता बिना तृष्णा का त्याग नहीं - संत पथिकजी
- ❖ संत चरित्र * गुरुकृपा ने मारुति को बना दिया निसर्गदत्त महाराज २२
 - * मोकलपुर के बाबा का प्रेरणाप्रद जीवन - स्वामी अखंडानंदजी २४
- ❖ गुरुसेवा के आगे ऐसा ऊँचा सुख भी न्योछावर ! २३
- ❖ तत्त्व दर्शन * बस, यही समझ की भूल है २५
- ❖ संतों की हितभरी अनुभव-वाणी २६
 - * गुरु अर्जुनदेवजी * परमहंस योगानंदजी * संत सुंदरदासजी
 - * संत निश्चलदासजी महाराज * संत बहेणाबाई (बहिणाबाई)
- ❖ विवेक जागृति * कैसे चुके गुरु-ऋण एवं क्या है असली धन ? २७
- ❖ शास्त्र दोहन * श्री अष्टावक्र गीता पर पूज्यश्री के अमृत-वचन २८
- ❖ पुण्यात्मा, उत्तम संतान की प्राप्ति के लिए २९
- ❖ स्वास्थ्य संजीवनी * उत्तम स्वास्थ्य हेतु कब व कितना पियें पानी ? ३०
 - * बवासीर का अनुभूत इलाज * पाचनशक्ति बढ़ाने हेतु उत्तम प्रयोग
- ❖ भक्तों के अनुभव * सेवा-अनुष्ठान से मिला महाबल ३२
 - * गुरुकृपा से भयंकर दुर्घटना टली - श्रीमती शीला सिंह
- ❖ संस्था समाचार * हरिद्वार आश्रम में महिला अनुष्ठान शिविर ३३
- ❖ सुखमय जीवन की अनमोल कुंजियाँ ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग



रोज सुबह ७-०० बजे



रोज रात्रि १०-०० बजे



इंटरनेट चैनल

Download
Rishi Prasad
Official, Rishi
Darshan &
Mangalmai
Official Apps

- * 'साधना प्लस न्यूज' चैनल टाटा स्काई (चैनल नं. ५४०), डिश टीवी (चैनल नं. ६७९), रिलायंस डिजिटल टीवी (चैनल नं. ४३१), बिहार में मौर्या सिटी (चैनल नं. ३११), राँची में जीटीपीएल व डेन केबल पर तथा 'JioTV' एन्ड्रोइड एप पर उपलब्ध है।
- * 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

गुरु संदेश

ऐसे ब्रह्मवेत्ता महापुरुषों का तो कितना-कितना आभार मानें !

- पूज्य बापूजी

सब एक ही चीज चाहते हैं, चाहे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी हों, इस देश के हों चाहे दूसरे देश के हों, इस जाति के हों या दूसरी जाति के हों । मनुष्य जाति तो क्या, देव, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, भूत, पिशाच भी वही चाहते हैं जो आप चाहते हैं । लक्ष्य सभीका एक है । प्राणिमात्र का लक्ष्य एक है, चाह एक है कि 'सब दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति ।' साधन भिन्न-भिन्न हैं क्योंकि गलतियाँ भिन्न-भिन्न हैं । कोई सोचता है कि 'खाने-पीने से सुखी होऊँगा', कोई बोलता है : 'धन इकट्ठा करने से सुखी होऊँगा', कोई यह सोचता है कि 'सत्ता मिलेगी तब सुखी होऊँगा' लेकिन आद्य शंकराचार्यजी कहते हैं :

**शरीरं सुरुपं तथा वा कलत्रं
यशश्चारु चित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।**

मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे

ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

'यदि शरीर रूपवान हो, पत्नी भी रूपसी हो और सत्कीर्ति चारों दिशाओं में विस्तरित हो, मेरु पर्वत के तुल्य अपार धन हो किंतु गुरु के श्रीचरणों में (उनके सत्संग, सेवा व आत्मानुभव में) यदि मन आसक्त न हो तो इन सारी उपलब्धियों से क्या लाभ ?'

संत तुलसीदासजी कहते हैं :

गुरु बिनु भव निधि तरङ्ग न कोई ।

जौ बिरंचि संकर सम होई ॥

ब्रह्माजी जैसा सृष्टि पैदा करने का सामर्थ्य हो जाय, शिवजी जैसा प्रलय का सामर्थ्य हो लेकिन जब तक सद्गुरु का, ब्रह्मवेत्ता गुरु का सान्निध्य न मिले तब तक यह भवनिधि, संसार-सागर तरना असम्भव है ।

लख प्याला भर-भर पिये, चढ़े न मस्ती नैन ।

एक बूँद ब्रह्मज्ञान की, मस्त करे दिन-रैन ॥



वह ब्रह्मज्ञान की मस्ती जब तक नहीं आयी तब तक अनेक-अनेक साधन जुटाते हैं दुःखों की निवृत्ति के लिए, अनेक-अनेक साधन जुटाते हैं सुखों को थामने के लिए लेकिन लक्ष्य की खबर नहीं । उद्देश्य तो सबका एक है, लक्ष्य तो सबका एक है लेकिन लक्ष्य के साधन की खबर नहीं । लक्ष्य के साधन की जिनको खबर है उनको सद्गुरु कहते हैं ।

जीव कीड़ी से लेकर कुंजर (हाथी) तक की योनियों में, मनुष्य से लेकर देव, गंधर्व, यक्ष आदि तक की योनियों में भटका किंतु उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हुई, अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं हुई ।

ऐसे समस्त प्राणियों को उद्देश्य की पूर्ति का ज्ञान दिलाने की जिन्होंने व्यवस्था की ऐसे भगवान व्यासजी के नाम से यह आषाढी पूनम व्यासपूर्णिमा के नाम से मनायी जाती है । ज्ञान कुल-परम्परा से एक से दूसरे की ओर बढ़ाया जाता है । पिता पुत्र को अपनी कुल-परम्परा का ज्ञान देता है, शिक्षक विद्यार्थी को शिक्षा देता है और सद्गुरु सत्शिष्य को अपना ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मरस देते हैं । ऐसा ब्रह्मसुख का मार्ग देना और उस मार्ग की विघ्न-बाधाओं को दूर करने की युक्तियाँ देना और बल भरना यह कोई साधारण व्यक्ति का काम नहीं है, ब्रह्मज्ञानी आचार्य का काम है । भगवान वेदव्यास ज्ञान के समुद्र होने के



पूज्य बापूजी का महापुरुषों के प्रति स्नेह

— स्वामी अक्षयानंदजी, हरिद्वार

हमारे बापूजी का हमारे गुरुदेव (ब्रह्मलीन संत श्री पथिकजी महाराज) से बहुत ही गहरा संबंध रहा है। हमारे गुरुजी परमार्थ आश्रम (हरिद्वार) में रहते थे। बापूजी वहाँ बीच-बीच में मिलने आते थे।

२० साल पहले की बात है। जब हमारे गुरुदेव ब्रह्मलीन हुए तब भक्तों में बहुत तरह की विचारधाराएँ पैदा हुई कि 'गुरुदेव के शरीर को जल में प्रवाहित किया जाय कि समाधि बनायें अथवा क्या किया जाय ?...' हमारे पास तो एक इंच भी जमीन नहीं थी। परमार्थ आश्रम के अध्यक्ष स्वामी चिन्मयानंदजी महाराज ने कहा : "यहीं समाधि बना दो।"

लगभग १०X१५ वर्ग फीट की जगह मिली। उस समय बापूजी का सत्संग-कार्यक्रम इंदौर में चल रहा था। परंतु वे कैसे, किस साधन से आये हमको पता नहीं लेकिन मौके पर वहाँ आये जहाँ समाधि दी जा रही थी। जब उन्होंने देखा कि यह जरा-सी जगह है तो मेरा हाथ पकड़ के बोले : "चलो, चिन्मयानंद के पास चलते हैं।"

बापूजी चिन्मयानंदजी से बोले : "देखो, ऐसे महापुरुष की समाधि के लिए इतनी जगह दो कि जहाँ कुछ लोग बैठ सकें, सत्संग-ध्यान हो सके।"

चिन्मयानंदजी सहर्ष राजी हो गये, बोले : "जितनी जगह चाहो ले लो।"

५०X५० वर्ग फीट की जगह ली। बापूजी और हम सबने मिलकर ५-५ फावड़े मारे। अभी वहीं रोज सत्संग होता है। तो यह हमारे बापूजी की देन है जो इतनी बड़ी जगह हमको —→



बापूजी निष्कलंक बाहर आयेंगे

४ जून को पाटेश्वर धाम के अधिपति महात्यागी रामबालकदासजी अपनी भक्त-मंडली के साथ अहमदाबाद आश्रम पधारे। उन्होंने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "यह स्थान पूज्य बापूजी की आध्यात्मिक ऊर्जा और तपस्या से आलोकित है। ऐसे पावन तीर्थ में आकर हम सभी अपने को धन्य महसूस कर रहे हैं ! पूज्य बापूजी के मार्गदर्शन में पूरे भारतवर्ष में गौरक्षा का महत्प्रयास चल रहा है तथा समाजोत्थान के और भी कई कार्य चल रहे हैं।

अभी कुछ दिन पहले जो हुआ, वह बहुत अन्यायपूर्ण है। यह तो पूरा-का-पूरा षड्यंत्र है। विदेशी शक्तियाँ चाहती हैं कि देश में जो भी आध्यात्मिक क्रांति उठे उसे दबाया जाय ताकि वह चेतना फिर न आ जाय जो भारत को विश्वगुरु पद पर स्थापित कर सके। पूरे भारत में सभी धर्मों, सम्प्रदायों के संतों को एक मंच पर लाने का प्रयास यदि कोई कर रहे थे तो वह बापूजी कर रहे थे। यह षड्यंत्रकारियों को खटकता था इसलिए उन्होंने यह आघात किया। हमें पूर्ण विश्वास है कि बापूजी निष्कलंक बाहर आयेंगे और पुनः पूरे समाज को जागृत करेंगे।" □

→ मिल गयी। हम बापूजी के इस उपकार को भूल नहीं सकते, उनके प्रति हम कृतज्ञ हैं। उनका उपकार हमारी संस्था, ट्रस्ट के प्रति भी है।

महापुरुषों पर लांछन लगाने के कार्य अभी से नहीं, पुरातन काल से ही चले आ रहे हैं। संत आशारामजी बापू के साथ जो हो रहा है वह तो बिल्कुल गलत है ! इसका निराकरण होना चाहिए, सरकार को भी सोचना चाहिए। □

वास्तव में सच्चा स्वर्ग यहाँ है



– संत राजारामजी, जोधपुर
बापूजी के आश्रम में आकर बहुत अच्छा लगा। यहाँ आते हैं तो शांति मिलती है। निंदा किसकी नहीं हुई है? परमात्मा को भी लोगों ने नहीं छोड़ा है! मीडिया द्वारा काफी कुप्रचार हो रहा है पर बापूजी के आश्रमों में आ के देखते हैं तो पता चलता है कि वास्तव में सच्चा स्वर्ग यहाँ पर स्थापित है।

आजादी के बाद का सबसे बड़ा अन्याय



– हिन्दूभूषण श्यामजी महाराज

मैं पूज्य बापूजी के चरणों में वंदन करता हूँ। जो अन्याय संत आशारामजी बापू के साथ हो रहा है, वह आजादी के बाद का सबसे बड़ा अन्याय है। इतने बड़े पैमाने पर अन्याय, अत्याचार किसी अन्य संत के साथ हुआ होगा ऐसा मुझे नहीं लगता।

...वरना तो यह धरती नरक बन जायेगी



– बालयोगी संत धनंजयदासजी

हमारे पूज्य संत श्री आशारामजी बापू, जिनके लगभग ४२५ तो आश्रम हैं और न जाने कितने सेवाभावी औषधालय व अन्नक्षेत्र चलते हैं, जिन्होंने हमारे देश के लिए कितना कुछ किया, हमारे देश की संस्कृति को दूसरे देशों में लेकर गये, ऐसे संत पर कीचड़ उछाला गया; हमारे लिए डूब मरने जैसी बात है। इस धरती पर जब तक संत हैं, भगवान के भक्त हैं, राष्ट्रभक्त हैं तब तक यह धरती धरती है वरना तो यह नरक बन जायेगी। जगह-जगह अराजकता फैल जायेगी। पापाचार इतना बढ़ जायेगा कि यह धरती भी त्राहि-त्राहि पुकार उठेगी।

संत रामचैतन्य बापू को भावभीनी श्रद्धांजलि



अखिल भारतीय साधु समाज के महामंत्री संत रामचैतन्य बापू का पंचभौतिक शरीर दिनांक १८ जून २०१८ को पंचतत्त्वों में विलीन हो गया। उनके देह-विलय पर संत श्री आशारामजी आश्रम एवं समस्त साधक-परिवार की तरफ से भावभीनी श्रद्धांजलि।

आपने पूज्य बापूजी का करीबी सान्निध्य-लाभ पाया था। पूज्य बापूजी के प्रति आपके हृदय में गहरा प्रेम व श्रद्धा थी। बापूजी के बारे में बोलते समय कई बार आपकी आँखों से प्रेमाश्रु छलक पड़ते थे। आप कहते थे : “संत आशारामजी बापू का समाज के प्रति कितना प्रेम है कि अपने शरीर की होली करके (पीड़ाएँ सह के) भी सबकी दिवाली कर देते हैं! पिछले ५ दशकों से बापू स्वयं कष्ट सह के समाज के लिए उजाला करते आ रहे हैं।”

बापूजी पर हो रहे षड्यंत्रों से आप बहुत व्यथित थे। आप कहते थे : “अरे, संत आशारामजी बापू ने कितना-कितना समाज को दिया है, कभी स्वार्थ का भाव नहीं रखा और जो उनके प्रति बुरा बोल रहे हैं, बुरा लिख रहे हैं, बुरा दिखा रहे हैं उनका भी बापू भला चाहते हैं। ऐसे संत के लिए जब कोई कुछ-का-कुछ कहे, उन पर कलंक लगाये तो हमें जागने की जरूरत है।”

आपका शरीर आज हमारे बीच नहीं है परंतु आपका संस्कृति व संतों-महापुरुषों के प्रति अपार प्रेम समाज के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

सत्संग मनुष्य-जीवन की खुराक है।
सत्संग के द्वारा ही सत्संग की महिमा का पता चलता है।
– पूज्य बापूजी



(गुरुपूर्णिमा : २७ जुलाई)

गुरुपूज्य का उत्सव शिष्य तो मनाते हैं, गुरु भी अपने गुरु का पूजन करते हैं और ऋषि भी अपने ऋषिगुरु का पूजन करते हैं । गुरुपूज्य उत्सव तो पार्वतीजी और शिवजी भी मनाते हैं, भगवान कृष्ण और राम भी मनाते हैं, मुनि भी मनाते हैं और हिन्दू भी मनाते हैं, मुसलमान भी मनाते हैं । यह गुरुपूज्य का महोत्सव तपप्रधान... दोषों को मिटाने की प्रधानतावाला उत्सव है ।

यह जो गुरुओं की परम्परा है और सम्प्रेषण शक्ति से शिष्य का आंतरिक रूपांतरण है वह और किसी साधन से नहीं हो सकता है । संत तुलसीदासजी ने भी कहा है कि 'यह गुन साधन तें नहिं होई ।' साधना तो करे पर साधना का फल यह है कि भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुषों में दृढ़ श्रद्धा हो जाय । उनकी कृपा से ही साधक आत्म-परमात्म स्वरूप को जान पाता है ।

गुरुकृपा हि केवलं शिष्यस्य परं मंगलम् ।

परम मंगल तो गुरु की कृपा से ही होता है, बिल्कुल पक्की बात है ! मेरा तो क्या, मेरे जैसे कितने ही संतों का

साधना प्रकाश

शिष्य का परम मंगल करनेवाला महापर्व

- पूज्य बापूजी

अनुभव है । हम स्थूल शरीर (अन्नमय शरीर) में दिखते हैं लेकिन और ४ शरीर इसके भीतर हैं । इस अन्नमय शरीर के अंदर प्राणमय शरीर है फिर मनोमय शरीर है । उसके अंदर है विज्ञानमय शरीर । विज्ञानमय शरीर मतलब विज्ञानियों का विज्ञान नहीं, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि - इनको सामूहिक रूप से विज्ञानमय शरीर बोलते हैं । गुरु-शिष्य का संबंध मनोमय और विज्ञानमय शरीर से शुरू होता है, जिन्हें मौत नहीं मार सकती, परिस्थितियाँ जिन्हें दबोच नहीं सकती । मनोमय और विज्ञानमय शरीर से गुरु-शिष्य का लेन-देन शुरू होता है । अन्नमय और प्राणमय शरीर तो बाहर से आने-जाने आदि में काम आते हैं लेकिन बाद में शिष्य कितना भी दूर हो, गुरुजी कितने भी दूर हों पर मानसिक यात्रा में देर नहीं लगती । विज्ञानमय शरीर की गहराई में है आनंदमय शरीर । इन पाँचों शरीरों से पार सत्य है, चैतन्य है, परब्रह्म-परमात्मा है और पाँचों में उसकी सत्ता है । पाँचों बदल जायें तो भी वह नहीं बदलता । पाँचों मर जायें तो भी वह नहीं मरता है । वहाँ तक की यात्रा कराने का उद्देश्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव का है ।

क्या है वास्तविक गुरुपूजा व गुरुदक्षिणा ? - संत पथिकजी

मानस भज रे गुरुचरणं दुस्तर भवसागर तरणम् ।

ऐहिक चमत्कारों की चर्चा में समय नष्ट न करो । प्रेम ईश्वर की ही किरण है । तुम प्रेम के कर्ता न बनकर सबमें, स्वयं में ईश्वरीय चेतना को देखने का अभ्यास बढ़ाओ और स्वयं प्रेम में तन्मय रहो । इष्ट (सद्गुरु, भगवान) को सद्भावों, सद्विचारों के सुमन अर्पण करो । यह तुम्हारी अपनी सामग्री है । हृदय में प्रतिष्ठित प्रभु की सुकर्मों के फलों से पूजा करो । स्वयं के व्यक्तित्व को इष्ट में खो देना ही उनकी पूजा है । गुरु के बताये हुए शाश्वत, निरंतर प्राप्त परमात्मा में स्थित रहो - यही गुरुदक्षिणा है । आस्था, विश्वास, उत्साह, धैर्य, साहस व प्रयत्न के द्वारा सिद्धि (सफलता) सुलभ होती है ।

गुरुसेवा सबको नमन, हरि-सुमिरन वैराग । ये चारों जब आ मिलें, समझो पूरन भाग ॥



विद्यार्थी संस्कार



एक सूरदास बालक में से कैसे बने महान संत ?



संत शरणानंदजी

छोटी उम्र में ही एक बालक की नेत्रज्योति चली गयी। सारा परिवार दुःखी हो गया। बालक सोचने लगा, 'हाय ! मेरा जन्म लेना कितने लोगों के लिए दुःखदायी हो गया है।'

बालक जिज्ञासु प्रकृति का था। उसने संसार के नश्वर सुख-भोगों में दुःख-ही-दुःख देखा। उसके मन में प्रश्न उठा, 'क्या ऐसा भी कोई सुख होता है जिसमें दुःख शामिल न हो ?'

एक दिन उसके पिता किसीसे बात कर रहे थे। बातचीत के सिलसिले में उन्होंने कहा : 'ऐसा सुख साधु-संतों के पास होता है जिसमें दुःख नहीं रहता।' यह बात बालक ने सुन ली और उसे जीवन की राह मिल गयी। उसने निश्चय कर लिया कि 'मैं अवश्य साधु बनूँगा।'

वह बालक एक संत के पास गया, बोला : 'मुझे भगवान के रास्ते लगना है, सूरदास हो गया हूँ।'

संत बोले : 'ठीक है, बन जाओ साधु।'

बालक बोला : 'मानो, साधु बन गया फिर ?'

'भजन करो।'

'महाराज ! भजन करें तो किसका करें ?'

'भगवान का करो।'

'भगवान का भजन कैसे करें ?'

'बेटा ! 'राम राम' करो।'

बालक ने कहा : 'उसमें मेरी श्रद्धा नहीं।'

महाराज क्षणभर शांत हुए, बोले : 'तुम भगवान को मानते हो कि नहीं मानते हो ?'

बालक : 'भगवान को तो मानता हूँ।'

महाराज खुश हो गये, बोले : 'यार ! उसीके हो जाओ न जिसके हो। रामनाम पर श्रद्धा नहीं है तो 'मैं उसका हूँ, वह मेरा है' - इतना ही तो मानना है, बस ! चाहे फिर उसको शिव मानो, राम मानो, आत्मा मानो, सर्जनहार मानो... तुम उसीके होकर चुप बैठा करो।'

और उस 'चुप साधन' ने उनको ऐसी महायोग्यता में ला दिया कि वही सूरदास बालक संत शरणानंदजी महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए और उनकी वाणी आज बड़े-बड़े संत भी पढ़ते हैं।

हम मंत्र का, गुरु का, संत-महापुरुषों का, भगवान का आदर करते हैं तो हम ही आदरणीय हो जाते हैं। तुम भी निश्चय करो कि 'मुझे भी परमेश्वर का साक्षात्कार करना है।' तो भगवत्कृपा से यह ध्येय भी तुम हासिल कर सकते हो। तुम्हारे भीतर परमात्मा की असीम शक्तियाँ छुपी हुई हैं।

ये पाँच मित्र सबके पास हैं...

- पूज्य बापूजी

विद्या शौर्यं च दाक्ष्यं च बलं धैर्यं च पञ्चमम् ।

मित्राणि सहजान्याहुर्वर्तयन्तीह तैर्बुधाः ॥

(१) विद्या (२) शूरता (३) दक्षता (४) बल (५) धैर्य

वैसे ये पाँच मित्र रहते तो सभी विद्यार्थियों के साथ हैं लेकिन अक्लवाले विद्यार्थी ही इनसे मित्रता करते हैं, इनका फायदा उठाते हैं, लल्लू-पंजू विद्यार्थी इनसे लाभ नहीं उठा पाते। जो बुद्धिमान हैं वे इनके द्वारा इस जगत में सारे कार्य करते हैं।

संतों की हितभरी अनुभव-वाणी

सच्चे संतों (सद्गुरु) की सेवा की वेला



– गुरु अर्जुनदेवजी

हे मित्रो, सुनो ! मैं विनतीपूर्वक कहता हूँ कि (यह मनुष्य-जीवन) सच्चे संतों (सद्गुरु) की सेवा की वेला है। (अतः शरीर रहते सद्गुरु की सेवा, सत्संग, उनके आदेशानुसार भगवन्नाम-स्मरणादि के द्वारा) इस संसार में रहते हरिनाम की कमाई कर लो। रात-दिन आयु घट रही है; मन को गुरु के उपदेशों में लीन कर अपना भविष्य सँवार लो।

इन्द्रियों की दासता से छुटकारा कैसे मिले ?



– परमहंस योगानंदजी

भगवत्प्राप्ति के बिना तुम स्वतंत्र नहीं हो। तुम्हारा जीवन आवेगों, मानसिक उतार-चढ़ाव, मनोवृत्तियों, आदतों और वातावरण के अधीन है। गुरु के उपदेश का पालन कर और उनके अनुशासन को मान के तुम इन्द्रियों की दासता से धीरे-धीरे छुटकारा पा लोगे।

परब्रह्म से आयी परम्परा



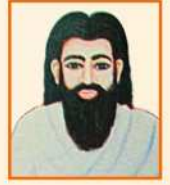
– संत सुंदरदासजी

परम्परा परब्रह्म तें, आयौ चलि उपदेश।

सुंदर गुरु तें पाइये, गुरु बिन लहै न लेश ॥

‘गुरु-परम्परा परब्रह्म से फूटकर आयी है। गुरु-उपदेश भी वहीं से चला आ रहा है। यह गुरु से ही मिलता है। गुरुकृपा के बिना कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता।’

बिना गुरुभक्ति के आत्मज्ञान नहीं



– संत निश्चलदासजी महाराज

ईश्वर तें गुरु में अधिक, धारे भक्ति सुजान।

बिन गुरुभक्ति प्रवीण हूं, लहै न आत्म ज्ञान ॥

‘बुद्धिमान शिष्य को चाहिए कि गुरु की भक्ति ईश्वर की भक्ति से अधिक (बढ़कर) करे क्योंकि सब शास्त्रों में प्रवीण व्यक्ति भी बिना गुरु की भक्ति के आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता।’

मेरे चित्त में अखंड



आपका ही ध्यान है

संत बहेणाबाई (बहिणाबाई)

अपने गुरुदेव संत तुकारामजी के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए कहती हैं : “हे गुरुदेव ! आप मेरी माता हो और मैं आपकी बालिका हूँ, आपके नाम का गुणगान कर रही हूँ। आप मेरी गौमाता हो, मैं आपकी बछिया हूँ और आपके ही नाम का हुंकार कर रही हूँ। आप मेरी हिरणीरूपी माँ हो तो मैं आपकी शावक हूँ और रात-दिन आपका ही ध्यान कर रही हूँ। आप मेरे चन्द्रमा हो तो मैं आपकी चकोर हूँ। आपको देखकर मुझे असीम आनंद हो रहा है। आप ही मेरे मेघ हो और मैं आपकी चातक पक्षी हूँ। मुझे सदैव आपके स्मरण से हर्ष हो रहा है। आप ही मेरे सज्जन, भगवद्-जन हो और मैं आपकी सान्निध्य-प्रेमी हूँ। मेरे चित्त में अखंड आपका ही ध्यान है। संत बहेणाबाई कहती हैं कि इस प्रकार श्री गुरु तुकारामजी मेरे प्राणसखा हैं, समस्त विश्व के मालिक हैं।”

हरिद्वार आश्रम में सम्पन्न हुआ महिला अनुष्ठान शिविर

२३ से २९ मई तक हरिद्वार आश्रम में महिला उत्थान मंडल का ७ दिवसीय 'चलें स्व की ओर...' जप-अनुष्ठान शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें महिलाओं की संख्या पूर्व के शिविरों से भी अधिक थी, जो इस बात को प्रत्यक्ष कर रही थी कि जिन्होंने संयममूर्ति पूज्य बापूजी के पवित्र जीवन को देखा है-समझा है, पूज्यश्री की अमृतवाणी को सुना-पढ़ा है, उन्हें किसीकी मनगढ़ंत बातों से बहकाया नहीं जा सकता। शिविर में स्वामी दिव्य चैतन्यजी, श्री परमेश्वरानंद सरस्वतीजी, स्वामी अक्षयानंदजी, साध्वी प्रज्ञानंदजी और स्वामी परमानंदजी ने उपस्थित होकर बापूजी का समर्थन किया। शिविर के दौरान शिविरार्थी बहनों ने ध्यान, यौगिक क्रियाओं, जप, कीर्तन, योगासन आदि के साथ पूज्य बापूजी के दुर्लभ विडियो सत्संग का लाभ लिया तथा शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक प्रसन्नता, व्यावहारिक कुशलता व आध्यात्मिक उन्नति की युक्तियाँ पायीं। जानते हैं कुछ शिविरार्थी बहनों के मनोभाव :

वैशाली चौहान, देहरादून : हमारे जैसे करोड़ों युवक-युवतियों को बापूजी ने संयम-सदाचार का महत्त्व बताया है। शिविर में हमने जाना कि सुखी, सम्मानित व सशक्त जीवन कैसे जिया जाता है।

कामिनी खैरनार, नासिक : शिविर में आकर हमारा प्राणबल बहुत बढ़ा है। हम सक्षम नारी बन रही हैं। घर में ऐसी साधना नहीं हो पाती।

दीपा वत्ता, सहारनपुर : पूज्य बापूजी से हमने जो पाया है वह शब्दों में बयान नहीं कर सकते। मैं मरने जा रही थी लेकिन गुरुद्वार पर आकर मैंने जीवन की दिशा पायी है।

प्रियंका शर्मा, मंडी : आज का युवावर्ग पाश्चात्य कल्चर की चपेट में, फैशन, फिल्मों,



नशे आदि की लत में आ चुका है। हमें पूज्य बापूजी से सही दिशा मिली है। हम जब से बापूजी से जुड़े हैं तब से जीवन में इतनी सादगी है, शांति है जिसका हम वर्णन नहीं कर सकते।

वंदना शर्मा, सहारनपुर : उनका दुर्भाग्य है जिन्होंने बापूजी पर झूठे आरोप लगाये हैं। जिन बच्चियों को बापूजी मर्दानी बनाना चाहते हैं, उनके साथ क्या ऐसा करेंगे ?

सुशीला सिंह, जौनपुर : बापूजी को सजा सुनायी जाने के बाद से तो मुझमें और मजबूती आ गयी। मीडिया ने लोगों के मन में जो भ्रम भरना चाहा, उसको दूर करने की सेवा में मैं लग गयी। समाज को बापूजी की बेहद जरूरत है।



दीपज्योति पंजाबी, असम : मैंने बापूजी से दीक्षा नहीं ली है। पहले मुझे विश्वास नहीं होता था कि इंसान भी भगवान हो सकता है लेकिन अब पता चला है कि वास्तव में सभी भगवत्स्वरूप हैं। जो अपने आत्म-परमात्म स्वरूप को जान जाते हैं वे भगवत्स्वरूप हो जाते हैं। उनकी महिमा निराली है। मैं आध्यात्मिक मार्ग में और आगे बढ़ना चाहती हूँ। मेरे जैसे निगुरे बहुत लोग हैं। मैं बापूजी को प्रार्थना करती हूँ कि हमें जल्दी-से-जल्दी मंत्रदीक्षा मिले।

विद्यार्थी शिविरों का आयोजन

ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में देशभर में २२५ से अधिक स्थानों पर हुए 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। अनेक स्थानों पर ७ दिवसीय 'विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर' भी सम्पन्न हुए।

सत्र २०१७-१८ की बोर्ड-परीक्षाओं में भी गुरुकुलों के उत्कृष्ट परिणाम

अहमदाबाद, लुधियाना, इंदौर गुरुकुलों का १०वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा।
अहमदाबाद सामान्य प्रवाह (हिन्दी व गुजराती माध्यम) तथा विज्ञान प्रवाह (हिन्दी माध्यम)
और रायपुर (हिन्दी माध्यम) का १२वीं बोर्ड का परीक्षा-परिणाम १००% रहा।

१०वीं राज्य बोर्ड परीक्षा-परिणाम

(PR = Percentile Rank)

आर्या जोहरी लुधियाना ९४.३१%	बाल गोविंद लुधियाना ९०.५०%	सागर सोनी रायपुर ८९.५०%	विशाल कुमार लुधियाना ८९.५०%	प्रीतम शर्मा अहमदाबाद ९८.८३ PR	शिवम वर्मा अहमदाबाद ९८.४८ PR	प्रियंक पटेल अहमदाबाद ९८.९४ PR	पोखराज नाग अहमदाबाद ९७.७७ PR	प्रेरणा कंदोई रायपुर ८५.५०%
प्रथम देवांगिन रायपुर ८४.५०%	प्रसाद देवपुरकर अहमदाबाद ९७.२३ PR	अविनाश चौधरी अहमदाबाद ९६.६९ PR	संजय यादव लुधियाना ८३%	मनीष प्रजापति अहमदाबाद ९५.७४ PR	राजू कुमार लुधियाना ८९%	शुकलेश्वर जाधव धुलिया ८९%	गोविंद यादव अहमदाबाद ९५.४५ PR	ओम पटेल सुरत ९४.६५ PR

१०वीं सीबीएसई बोर्ड परीक्षा-परिणाम

प्रशांत पचौरी आगरा ९९.६०%	श्याम पटेल इंदौर ९९.४०%	हरिओम गुप्ता छिंदवाड़ा ९९.२०%	नितिन कुमार आगरा ९०.६०%	दीपिका राणा आगरा ९०.२०%	कृतिक गहलोत इंदौर ९०%	अंकुश रावत जयपुर ८९.६०%	यश अग्रवाल छिंदवाड़ा ८८%	रिया चौधरी आगरा ८६.८०%
गौरव गोला आगरा ८६.२०%	ओम चौहान इंदौर ८४.४०%	नितेश जाधव इंदौर ८४%	सुदीक्षा कुमारी छिंदवाड़ा ८३.८०%	शिवशाह छिंदवाड़ा ८३.४०%	प्रांजल यादव छिंदवाड़ा ८३.४०%	सिद्धार्थ राठौर छिंदवाड़ा ८२.८०%	हरिओम गुर्जर जयपुर ८२.४०%	निकिता पहाड़िया जयपुर ८२%

१२वीं बोर्ड परीक्षा-परिणाम

प्रणव अग्रवाल इंदौर ९२%	देवर्षि पटेल छिंदवाड़ा ८८.८०%	सूरज कुमार छिंदवाड़ा ८८.२०%	शौर्य आनंद इंदौर ८७.४०%	योगेश अंजना इंदौर ८७.२०%	गौरव सदाफले छिंदवाड़ा ८५.६०%	गोपाल राठौड़ अहमदाबाद ९७.३८ PR	विकास राजपूत अहमदाबाद ९६.३६ PR	आशीष वार्ण्य आगरा ७९.६०%

उपरोक्त गुरुकुलों के सिवाय सरकी लिमड़ी, गोंदिया, रजोकरी-दिल्ली, अलीगढ़, वाराणसी, दंतोड़, दमोह, गाजियाबाद, जम्मू, खिलचीपुर, बिनका, राजकोट, पिटोल, मोखड़ा, कोटगढ़, बस्ती आदि स्थानों पर भी गुरुकुल चलाये जा रहे हैं।

युवा सेवा संघ के तेजस्वी युवा शिविर

RNI No. 48873/91

RNP. No. GAMC 1132/2018-20

(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2020)

Licence to Post Without Pre-payment.

WPP No. 08/18-20

(Issued by CPMG UK, valid upto 31-12-2020)

Posting at Dehradun G.P.O. between

1st to 17th of every month.

Date of Publication: 1st July 2018



राजनांदगाँव



नंदिनी नगर (छ.ग.)



रायपुर



बेलौदी, जि. दुर्ग



कवर्धा



बेमेतरा



विलासपुर



बोईसर (महा.)

‘ऋषि प्रसाद’ द्वारा सच्चे सुख का प्रसाद जन-जन तक पहुँचानेवाले पुण्यात्मा



हरिद्वार



नासिक



सावंतवाडी, जि. सिंधुदुर्ग (महा.)



भुसावल

विद्यार्थी अनुष्ठान शिविरों व विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों का लाभ लेते विद्यार्थी



रायपुर (छ.ग.) में ७ दिवसीय विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर



उदयपुर



हिसार (हरि.)



जयपटना, जि. कालाहांडी (ओड़िशा)



जम्मू



कटिहार (बिहार)



कटक



दागपुर



अनगुल (ओड़िशा)



रजोकरी-दिल्ली



रोहतक (हरि.)



मोतिहारी (बिहार)



कासगंज (उ.प्र.)



इसदर, जि. डांग (गुज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।



दीपावली के पावन पर्व पर अहमदाबाद आश्रम में



विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर ५ से ११ नवम्बर

* बड़े साधक भी अनुष्ठान-शिविर का लाभ ले सकते हैं। * जुलाई के पहले सप्ताह से ही ट्रेन के आरक्षण शुरू हो रहे हैं।

सम्पर्क : बाल संस्कार विभाग, अहमदाबाद आश्रम दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१